नारी संस्कृति की गौरव गरिमा

शशी सिंह, सहायक अधिकारी (अनुवाद)
बी.एच.ई.एल., हरिद्वार।

आज नारी जागरण और नारी उद्धार के नाम पर बहुत कुछ पाश्चात्य का अंधानुकरण चल पड़ा है। महानगरी की ऐसी दुर्दशा है कि कोई सुदूर गांव से शिक्षित-सभ्य व्यक्ति आ जाए तो उसे आंखों में पट्टी बांधकर शहरों की गलियों से गुजरना पड़ेगा। नारियों को आगे लाने के नाम पर मॉडलीकरण की बाड़ खड़ी कर दी गई है। ऋषियों ने नारी के शिक्षण, संस्कार और समान अधिकार की बात कही थी। उन्हें सीता, सावित्री, अपाला, गार्गी, मैत्रयी बनाने पर बल दिए थे। परन्तु तथाकथित प्रबुद्ध समाज ने इस चेतना को एक किनारे रख दिया व नारी को सूपर्णखा जैसे भड़कीले परिधानों से सज्जित कर दिया। विश्व सुंदरी प्रतियोगिता, फैशन शो प्रत्यक्ष उदाहरण के रूप में सामने आया है। जिस सुन्दरता की व्याख्या शास्त्रों ने सत्य और शिव के रूप में की है उसे मात्र स्थूल परिभाषा एवं बाहरी आवरण से ढक दिया गया है शिव का अर्थ कल्याण एवं सेवा से है। इसे रानी लक्ष्मीबाई, मीरा, सावित्री, शांति-सुनीति, पन्ना, ऐनीबेसेंट, हैरियट स्टो, भगिनी निवेदिता जैसी नारियों ने सजाया संवारा था। राष्ट्र धर्म, विश्व धर्म के लिए इन नारियों ने अपने जीवन को बलिदान कर दिया था सही अर्थो में इन नारियों ने सत्य, सेवा और सौंदर्य को जाग्रत कर दिखाया था। आज विश्व सुंदरी प्रतियोगिता आयोजित कर प्रदर्शन के अंधकार में ढकेलने वाले मर्दों को ये परिभाषा समझ में नहीं आयी। नारी अर्थात् संस्कृति को अपमानित करने के लिए तुले हुए हैं। एक परिदृश्य यह भी सामने आया है कि विश्व सुंदरी प्रतियोगिता के नाम पर भारत के नारी समुदाय को पूरी तरह से पाश्चात्य की ओर उन्मुख किया जा रहा है। पामिला नामक भारतीय नारी विश्व सुंदरी प्रतियोगिता जीतने विदेश जाकर बस गई, बाद में अखबारों ने यह रहस्य खोला कि उसे बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने मॉडल के नाम पर प्रयोग किया। विगत वर्षो में कई भारतीय नारियों के सिर पर ताज पहनाया गया है ये इस प्रतियोगिता में ताज पहनने के बाद या तो फिल्म में चली जाती हैं या विज्ञापनों में मॉडल बन जाती है। अभी तक ऐसी कोई नारी नहीं हुई जो सुंदरी का ताज पहनने के बाद समाज या राष्ट्र की सेवा में लगी हो चाहे वह भारतीय हो या विदेशी हो।

समाज अपने धर्म शास्त्रों के आख्यानों को भूल गया जिसमें "सिरा राम मय् सब जग जानी", "राधे श्याम मनोहर सोंही" की परिकल्पना मात्र गाने और सुनाने तक रही वह सामाजिक जीवन में साकार होते नहीं दिखाई दी। सीता अयोध्या को छोड़कर जब वन में गई तो अयोध्या में प्राण नहीं रहा। पूरी अयोध्या सुनी रह गई। दुःखों और संकटों का तांता लग गया। सृष्टि संचालिका शक्ति के परित्याग का परिणाम असह्य वेदना के रूप में समाज को झेलना पड़ा था। कहा जाता है मानव समाज अतीत से सीखकर बदलता है वर्तमान को बनाने का प्रयास करता है परन्तु नारी उद्धार की दिशा में समाज ने अतीत की धाराओं को किनारे रख दिया उसके शील-सम्मान की रक्षा तो दूर, विज्ञापन की वस्तु बनाकर चौराहे में लाकर खड़ा कर दिया है। आज का समाज नारी को सौंदर्य के नाम पर विज्ञापनों में भड़कीले परिधानों में बांधने का दुःसाहस कर रहा है। इन विज्ञापनों एवं दृश्यों को देखकर युवा मानव पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। परिणाम - आदमी जानवर बनकर अपराध कृत्यों की ओर बढ़ गया है। समाचार, पत्र-पत्रिकाओं में बाल अपराध, नारी, अपमान, बलात्कार, अपहरण के समाचारों से भरते जा रहे हैं। परिणाम-स्वरूप संस्कृति सभ्यता, संस्कार लुप्त

होते दिखाई दे रहे हैं। नियंता पुनः इस भ्रष्ट समाज को सामूहिक दंड देने के उद्वत है, भूकम्प, बाढ़, अनावृष्टि इसके स्पष्ट होते उदाहरण के रूप में दिखाई दे रहे हैं।

युग ऋषि पंडित श्री राम शर्मा आचार्य जी ने कहा है कि यह समय मानव समाज के चेतने (सुधरने) का है इस समय को वह नकार नहीं सकता। भलमनसाहत अपनी गलती सुधार कर लेने में है। नारी को शीलता और संस्कार की ओर लाने का प्रयत्न करना चाहिए उन्हें देवी पद पर पुनः प्रतिस्थापित करने की आवश्यकता है तभी नारी अर्थात् संस्कृति का उद्वार हो सकता है जो संस्कृति परिवार मंदिर से कहीं दूर चली गई है उसे अस्तित्व में लाना प्रबुद्ध समाज का ही कर्तव्य है।

राष्ट्र का कल्याण, समाज की प्रगति और उसका वैभव, मुख्य रूप से नारी की स्थिति पर निर्भर है। इसलिए राष्ट्र की सच्ची सेवा और समाज की प्रगति का काम, नारी वर्ग के बेहतर बनाने से ही संभव है। वे सृजनात्मक शक्ति की मूर्तिमान रूप है। आध्यात्मिक व भौतिक सम्पन्नता के क्षेत्र में केवल उन्हीं लोगों ने प्रगति की है, जिन्होंने सर्वव्यापक शक्ति को चलती फिरती प्रतिरूप नारियों के रूप में पूजा है।

भारतीय दर्शन "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता" भी तभी सार्थक होगा अन्यथा केवल थोथी बातों, वादों या विचारों में कुछ नहीं रखा। नारी स्तुत्य थी, है और सदा रहेगी, जमाना चाहे कुछ भी सोचे। नारी की अपनी धारणा शक्ति उसे सदा से वन्दनीय बनाए हुए है क्योंकि ईश्वर के बाद यदि कोई सृष्टा है तो वह केवल और केवल नारी है। वंश बेल को पुष्पित करने के साथ-साथ स्वरूपता को गति देने वाली नारी सर्वश्रेष्ठ है।

***